वेदान्त कारिका

लेखक

श्री श्री १०८ श्री परम हंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ
श्रीदण्डी स्वामी लक्ष्मणाश्रम जी महाराज पूज्यपाद
के शिष्य ब्रह्मनिष्ठ, पूज्यचरण
श्रीदण्डी स्वामी श्रीरामाश्रम जी महाराज सुगुप्त-मौनी

प्रकाशक
पंडित गजेन्द्रनाथ सहारिया जोशी
६५, वी. पी. रोड, सी. पी. टेन्क,
बम्बई, ४.

चंद्र प्रिन्टींग प्रेस, ४५१, कालबादेवी रोड, मुंबई नं. २.

पुस्तक मिलने के पतेः—

(१) श्री देवेन्द्र स्वरूप ब्रह्मचारी, ऋषिकेश, देहरादून

(२) कृष्णादेवी, रामह्रद (रामरा) कुरुक्षेत्र, पेपसू.

(३) ठाकुर ज्वालासिंह, भृगुक्षेत्र (भैरियाघाट)
पोस्ट अनूपशहर जिला बुलन्दशहर

(४) पंडित गजेन्द्रनाथ शर्मा, आर्यन स्टोर,
६५, विठ्ठलभाई पटेल रोड, सी. पी. टेन्क, बम्बई नं. ४.

यह पुस्तक सूरजभान रामकुमार बम्बई वालों ने अपने धर्मोपार्जित द्रव्य से छपवाई ।

तत्सद्ब्रह्मणे नमः

निवेदन

श्री मत्परमहंस परिव्राजक स्वामी श्री रामाश्रमजी महाराज द्वारा रचित यह जो चालीस कारिकाएं हैं, सो उन्होंने सिर्फ जिज्ञासुओं एवं मुमुक्षुओं और केवलाद्वैत-सिद्धान्त-रसिक वेदान्तियों के लिये, गागर में सागर ही भर दिया है। इनकी भाषा भी सादी, सरल एवं मर्मस्पर्शिनी है, ताकि संसकृत न जानने वाले जिज्ञासुओं को समझने या कंठाग्र करने में सुगमता हो, लेकिन अगर फिर भी किसी कारिका का अर्थ या भाव साफ साफ समझ में न आये या कोई शंका हो, तो "मौनामृतबिंदु" नामक पुस्तक जो कि इन्हीं कारिकाओं के रचयिता श्रीस्वामी जी महाराज द्वारा ही रचित है, अवश्य पढ़ें। उस पुस्तक में इन्हीं वेदान्त कारिकाओं का यानी एक एक कारिका का खुलासावार और ब्योरेवार, सुन्दर एवं विशद अर्थ वर्णन किया गया है, साथ ही साथ उपनिषद, दर्शन, भगवद्गीता व दूसरे वैदिक ग्रन्थों और वेदान्त ग्रन्थों के प्रमाणादि के सहित, अत्युत्तम रीति से, तात्त्विक विवेचन किया है। उसमें जीव जगत, ईश्वर, ब्रह्म, ब्रह्मज्ञानी मोक्ष और मोक्ष के साधन आदि पर विशेष रूप से प्रकाश डाला है। चारों साधन, अर्थात् (१) विवेकः—नित्य, अनित्य, वस्तु का ज्ञान (२) वैराग्य—इस लोक तथा परलोक के विषय भोगों में तृष्णा-रहितपना (३) शमादि षट-सम्पत्ति (शम-मनोनिग्रह, दम इन्द्रियों का निग्रह, श्रद्धा-श्री सद्गुरु के

और वेदान्त के वाक्यों में सुदृढ़ विश्वास, समाधान-मन की स्थिरता, उपरति-फलेच्छा पूर्वक प्रवृत्ति का अभाव, और तितिक्षा-सुख दुख तथा शीतोष्णादि द्वन्दों को सहन करने की सामर्थ्य) (४) मुमुक्षुता—मोक्ष प्राप्ति की उत्कट उत्कंठा उत्पन्न होना, यानी साधन-चतुष्टय-सम्पन्न, वेदान्त श्रवण, वेदान्त मनन और निदिध्यासन करने वाले जिज्ञासुओं के लिये अवश्य ही अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी, एसे उच्च भावपूर्ण तथा विलक्षण विचार और यह मार्मिक तत्व विवेचन करना तो पूज्य चरण श्री स्वामीश्री रामाश्रमजी महाराज जैसे ब्रह्मविद वरिष्ठ और ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय महात्मा की ही सामर्थ्य है। उनके सम्बन्ध में तो हम यह निम्नलिखित, सिर्फ चन्द लाइनें ही स्मरण करके सन्तोष मान लेते हैं।

ॐ ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं,
द्वन्दातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षीभूतं,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

अखण्ड मण्डला कारं व्याप्तम् येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः

१४-१६, विल्सन स्ट्रीट,
बम्बई, ४.

विनीत,
गजेन्द्रनाथ गंगाप्रसाद सहारिया-
जोशी के जय सच्चिदानंद
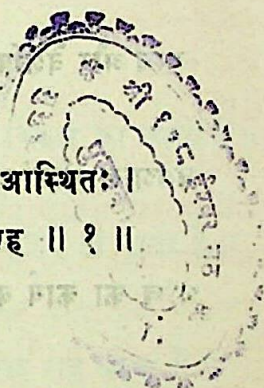
श्रीश्रीरामाश्रमः स्वामी तुरियाश्रम आस्थितः ।
मुमुक्षूणां हितार्थाय पुस्तकं संचकारह ॥ १ ॥

वेदान्त कारिका

॥ प्रथम कारिका (कवित्त) ॥

ॐकार ब्रह्म का प्रतीक चारपाद कहा,
अ, उ, म अर्धमात्रा वेदोंमें गाया है।
विश्वही विराट् हिरण्यगर्भ तैजसरूपजान,
ईश्वरही प्राज्ञ यें ब्रह्मरूप पाया है ॥

जागृत म बहिः प्रज्ञ स्वप्नमें अन्तः प्रज्ञ,
सुषुप्ति में एकीभूत प्रज्ञान घन आया है।
अन्तः बहिः नहीं, नहीं उभय न प्रज्ञान घन,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णी ही बताया है ॥ १ ॥

॥ द्वितीय कारिका ॥

न्याय और वैशेषिक को अनुमान ही प्रमाण कहा,
योग और सांख्य में प्रधान दरशाया है।
धर्मशास्त्र मीमांसा में यज्ञरूप "यज्ञोविष्णु",
ऐसा कहकर के ही यज्ञ रचवाया है।
शास्त्र का कार्य कारण "शास्त्रयोनित्वात्" रूप
ब्रह्म सूत्र उत्तरमीमांसा से पाया है॥
नेति नेति वेद कह अप को दर्शाय रहे,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है॥ २॥

॥ तृतीय कारिका ॥

उत्क्रांति गति आगति से अणुजीव,
"एषोऽणुरात्मा" मुण्डक में गाया है।
बाला शतभागकहीं आराग्रमात्र कहा,
अंगुष्ठप्रमाण वास हृदय में बताया है॥
चैतन्यचिदाभासयुक्त बुद्धि अणुरूप कही,
महानानुरोध नहीं एक में समाया है।
विभु सर्व व्यापक ब्रह्म वारपार पाया नहीं,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है॥ ३॥

॥ चतुर्थ कारिका ॥

एकमृत्पिण्ड से सर्व घटज्ञान होवे,
मृत्तिका ही सत्यनाम विकार का छाया है ॥
सुवर्ण आदि ज्ञान से सर्व भूषणज्ञान होवे,
वाचारम्भणमात्र सत्य सुवर्ण ही पाया है ॥
एक सुनने से सर्व विना सुना, सुना जावै,
एक के विचार से विचार सब आया है ॥
जिसके जानने से सर्व जानी जावे वस्तु सोई,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ पञ्चम कारिका ॥

जीवईश एक लक्ष लक्षणा से लखे गये,
जहत अजहत रूप लक्षणा का पाया है ॥
जहत से हो निज का त्याग अन्य का ग्रहण होवे,
अजहत से निज में अन्य को मिलाया है ॥
लक्षणा जहत नहीं स्वयं त्यागे अनृत होवै,
अजहत भी नहीं क्योंकि अन्यरूप माया है ॥
भाग त्याग लक्षणा से 'तत्वमसि' कहा सोई,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ षष्ठ कारिका ॥

अलक्ष्य है लक्ष्य नहीं लक्षणा से लख्या कैसे
अलक्ष्य को लक्ष्य ऐसे श्रुति ने लखाया है ॥
बाल युवा कुमारी स्त्री पुरुष कहीं वृद्ध दण्ड हाथ,
वात कफ को उसने दबाया है ॥
रूप है रूप नहीं सर्व रूप दृष्टि आवै,
जैसी हो उपाधि वैसा दृष्टि में आया है ॥
उपाधि से हीन लक्ष्यालक्ष्य कहा जावे नहीं,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

सप्तम कारिका ॥

जीवईश मिथ्या माया अविद्या उपाधि रूप,
उपाधि है मिथ्या कहो भेद कहां पाया है ॥
गुरू शिष्य भेद मिथ्या शास्त्र पुराण मिथ्या,
वेद भी मिथ्या सब वेदों में गाया है ॥
वेद नाम जानने का मिथ्या वृत्ति ज्ञान सोई,
मिथ्या प्रपंच नष्ट उसी को दर्शाया है ॥
मिथ्या को नष्ट करके आप भी नष्ट होवे,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ अष्टम कारिका ॥

उभयलिङ्ग रूप ब्रह्म वेदों में कथन किया,
मूर्त अमूर्त कह श्रुति में गाया है॥

विदित से परे और अविदित से भी उर्ध्व जान,
विज्ञ को अविज्ञ और अविज्ञ को दर्शाया है॥

'नेहनानास्तिकिञ्चन' लिङ्गका निषेध किया,
परमार्थ तत्त्व अलिङ्ग ही पाया है॥

नेति नेति वीप्सा से वेदों का आदेश सोई,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है॥

॥ नवम कारिका ॥

विधि और निषेध भेदवादी को देते खेद
वेद में अभेद कर्म लिंग नहीं आया है॥

वाणी जिसको कहे नहीं, चक्षू से न देख सके,
देवतादि तप से भी नहीं दरशाया है॥

ग्रहण और त्याग से वेलाग भागवान कोई,
'निष्कल ध्यान' में स्वरूप को लखाया है॥

सत्यासत्यवाद त्याग कोई पक्ष लेवे नहीं,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया हैं॥

॥ दशम कारिका ॥

शुद्ध आचार और विचार अनाचार सर्व,
रूप है विलक्षण तेरा बेदों में गाया है ॥

वस्तु के अधीन बोध, कर्म के अधीन नहीं,
धर्म और ध्यान, पुरुषाधीन बतलाया है ॥

सदेह से कर्म फल सुखदुःख भागी बने,
विदेह से व्यवहार में लोप नहीं आया है ॥

सत्यपद पाये पीछे कर्तव्य का ताप नहीं,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ एकादश कारिका ॥

शुक्ति की रजत के भूषण कहीं देखे नहीं,
रज्जू के सर्प ने कहो कौन खाया है ॥

मरु मरीचिका के जल से कहो किसकी मिटी प्यास,
ठूंठ के चोर ने लूटी किसकी माया है ॥

भ्रान्ति से जगत ऐसे आत्मा में भास रहा,
बिना अधिष्ठान भ्रम दृष्टि नहीं आया है ॥

प्रलय नहीं सृष्टि बिना, बन्ध मोक्ष होवे किसे,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ द्वादश कारिका ॥

हीं अधिष्ठान आप, मुझमें मुझे भ्रम हुआ,
और द्वैत वस्तु नहीं जिसमें भ्रम पाया है ॥

जड हो अधिष्ठान वहां दूसरे को भ्रम होवै,
चेतनाधिष्ठान वहां चेतन भ्रमाया है ॥

सोया तव एक और स्वप्न में अनेक द्वन्द,
जागा तव भी एक पाई वही एक काया है ॥

ऐसे ही अद्वितीय ब्रह्म एक रस रहै सदा,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णी ही बताया ह ॥

॥ त्रयोदश कारिका ॥

निद्रा से स्वप्न में अनेकसा भास रहा,
अविद्या से ब्रह्म में संसार दृष्टि आया है ॥

काया से अभिन्न कल्पित काया में निद्रा जैसे,
ब्रह्म से अभिन्न ब्रह्म बीच कल्पित माया है ॥

शक्ति शक्तिमान से भिन्न दृष्टि आवे नहीं
कार्य से कारण का अनुमान भी लगाया है ॥

निद्रा से स्वप्न ऐसे अविद्या से जगत् मिथ्या,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ चतुर्दश कारिका ॥

एक ही अद्वितीय था तो कहो किसे भ्रम हुआ,
उसे ही हुआ भ्रम जिस ने प्रश्न ठाया है ॥

द्वैत को देखे सोई द्वैत का वखान करे,
एक में कौन कहो किसे नजर आया है ॥

होता यदि जगत इसकी निवृत्ति भी देखी जाती,
विना हुआ निवृत्त नहीं परमार्थ ही पाया है ॥

बोध कारण शून्य में प्रपंच का आरोप किया,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ पञ्चदश कारिका ॥

अतम अन्धकार प्रकाश से भी परे जान,
सत्य ना असत्य नहीं शिवरूप पाया है ॥

अज है विरज है न ग्राह्य है न त्याज्य है,
प्रपंच से दूर भी प्रपंच सा दिखाया है ॥

पंचप्राण वर्ग सप्त धातु नहीं पंचकोश,
देह इंद्रिय रूप नहीं दृष्टि में न आया है ॥

कुछ है और कुछ नहीं ऐसी कल्पना भी नहीं,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ षोड़श कारिका ॥

कुछ है और कुछ नहीं फिर भी मिथ्या रूप नहीं,
आत्मा है तुर्य सब वेदों में गाया है ॥

'तत्त्वमसि' छांदोग्य 'अयमात्मा', वृहदारण्य
तत् से आत्मा छांदोग्य में आया हैं ॥

'यत्साक्षाद परोक्षाद्ब्रह्म' वृहदारण्य श्रुति कहे,
'सबाह्याभ्यन्तरो ह्यजः' मुण्डक में पाया है ॥

'आत्मैवेदं सर्वम्' इन श्रुतियों में कहा सोई,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ सप्तदश कारिका ॥

प्रत्यक्ष है तुर्य लब्ध मूर्खों को होता नहीं,
ज्ञानियों को ब्रह्म पद पदवीच पाया है ॥

जाग्रत का त्याग और स्वप्न बीच गया नहीं,
मध्यकी अवस्था में रूप दरशाया है ॥

देश से देशान्तर की वृत्तियों के मध्य वीच,
स्वासोच्छास मध्य वीच रूप को लखाया है ॥

इदम् शब्द से नहीं प्रत्यक्ष करे कोई इसे,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ अष्टादश कारिका ॥

क्रोध से हूंकारमार वाणी से बोले नहीं,
पंडितों को बालकों का खेल ही दरशाया है ॥

मौन नाम सन्यास का आत्मा को जान करके,
भिक्षा चरण करते ब्राह्मण वेदों में गाया है ॥

बोले डोले तिष्ट मिलै गन्धरस पान करे,
दखे सुने कार्य तो सारा ही चलाया है ॥

संकल्प अरु वासना को त्याग करके ठोस रहे,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णी ही बताया है ॥

॥ उनविंश कारिका ॥

जान गया तो जान गया जनाने की जरूरत नहीं,
अनजान होके जिसने रूप को छिपाया है ॥

पण्डित न बाल सम साधु ना असाधु नहीं,
वर्ण आश्रम लिंग हीन सोई पद पाया है ॥

देवता की महिमा जैसें मूर्खों को पावे नहीं
ऐसे ही भेद तेरा, देवों को न पाया है ॥

बुद्धि मन वाणी की जहां पर गम नहीं,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है॥

॥ विंश कारिका ॥

प्रमाण विपर्यय विकल्प निद्रा स्मृति रूप,
पंच भेद यत वृत्तियों के शास्त्र में ही गाया है॥

वृत्तियों का कारण मन अविद्या का कार्य सोई,
अविद्या हो नष्ट सो अदृष्ट कहलाया है॥

आत्मा से आत्मा में संतुष्ट रहे सदा,
हृदय ग्रन्थि भेदन सो परावर दृष्टि आया है॥

"यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामायेऽस्य हृदिश्रिता,"
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है॥

॥ एकविंश कारिका ॥

दुःख में उद्वेग नहीं सुख की न स्पृहा जिसे,
राग भय क्रोध नहीं दृष्टि में आया है।

सर्वत्र स्नेह त्याग निंदा न प्रशंसा नहीं,
नहीं प्रिया प्रिय शुभाशुभ बीच पाया है॥

चहि अन्तःकरण शम दम से वश करे,
मानोमथ आत्मा परायण कहलाया है॥

समभाव एक दृष्टि सदा स्थित प्रज्ञ सोई,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है॥

॥ द्वाविंश कारिका ॥

दुःख सुख आलस्य निद्रा प्रकाश प्रवृत्ति,
मोह कारण सत् रज तम नाम जिसका माया है ॥
प्रवृति से दुःख और निवृत्ति से सुख होवे,
माया अविद्या रूप परमार्थ न पाया है ॥
अविद्या विद्यमान नहीं मिथ्या का त्याग किया,
गुणातीत लक्षण स्वलक्षण कहलाया है ॥
प्रवृति में दुःख नहीं निवृत्ति में सुख सोई,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ त्रयोविंश कारिका ॥

तुल्य प्रिया प्रिय धीर, निंदा और स्तुति तुल्य,
उदासीन, चले नहीं गुणों का चलाया है ॥
सम दुःख सुख जिसको, आत्मा में स्थित जो है,
पत्थर मिट्टी कांचन, समान दृष्टि आया है ॥
मान अपमान तुल्य, मित्र अरि वर्ग तुल्य,
सर्व कर्म त्यागी गुणातीत कहलाया है ॥
भाष्यकार आदि स्वयं संवेद्य कहें जिसे,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ चर्तुविंश कारिका ॥

वेद पारगामी जिनके राग भय क्रोध नहीं,
कल्पना से हीन, दृष्टि शान्त–पद आया है ॥

जगत में विचरण करते दृष्टि में आवैं ऐसे,
जड़ोन्मत्त बालवत व्यवहार दर्शाया है ॥

चलाचल निकेत स्वधाकार नमस्कार नहीं,
यदृच्छा लाभ सन्तुष्ट वही कहलाया है ॥

तत्त्वीभूत तत्व में रमण कभी न्यारा नहीं,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ पञ्चविंश कारिका ॥

आत्मा अनात्मा का विवेचन मैं करता नहीं,
विद्वानों को रूचै नहीं मेरे मन भाया है ॥

अनात्मा कोई वस्तु नहीं दृष्टि में आवे सोई,
विवेकियों का दृश्य मिथ्या श्रुति में गाया है ॥

आश्चर्य यही मिथ्या विचार विवाद करते,
आत्मा प्रत्यक्ष जिनको दृष्टि नहीं आया है ॥

भ्रान्ति का पार नहीं दृढ़ बुद्धि शिलवत्,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ षड्विंश कारिका ॥

मैं ही एक द्रष्टा चैतन्य, दृश्य है प्रपञ्च सभी,
दृष्टिगोचर सोई दर्शन कहलाया है ॥

द्रष्टा की दृष्टि का लोप कभी होवे नहीं,
वेद और वेदान्त में प्रमाण यह पाया है ॥

सकृत्भासमान सोई द्रष्टा अन्य कोई नहीं,
दृश्य और दर्शन भ्रम उसी में दर्शाया है ॥

द्रष्टा दृश्य दर्शन और सर्व का प्रकाशक सोई,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ सप्तविंश कारिका ॥

ज्ञान जिससे जाना जावे जाने सोई ज्ञाता होवे,
जानी जावे वस्तु सोई ज्ञेय कहलाया है ॥

प्रमाता प्रमाण प्रमेय ध्याता ध्यान ध्येय,
तीनों के समूह में व्यवहार को चलाया है ॥

कर्ता कर्म क्रिया और करण विषय देव सभी,
त्रिपुटि रूप संसार दृष्टि में आया है ॥

ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय आदि त्रिपुटि प्रकाशक सोई,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ अष्टाविंश कारिका ॥

चित्त का अभाव जहां चिन्तन भी होवै नहीं,
देह के अभाव से काल किसका आया है ॥

बाल युवा हुआ नहीं कहो जरा होवै किसे,
मृत्यु का अभाव कहो जन्म कौन पाया है ॥

कर के अभाव से तो क्रिया कर्म होवै नहीं,
पाद के अभाव सों निर्गत कहलाया है ॥

अन्तःकरणाभाव से दुःख सुख होवैं नहीं,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ उनत्रिंश कारिका ॥

चित्त वृत्ति हीन चित्त वृत्ति में ही भास रहा,
सर्व वृत्ति हीन सोई तुर्य कहलाया है ॥

बन्ध वही मोक्ष वही, बन्ध–मोक्ष–हीन वही,
मुक्तामुक्त वही नहीं मुक्तामुक्त पाया है ॥

द्वैत और अद्वैत वही द्वैताद्वैत हीन वही,
सर्व रूप हीन, सर्व रूप दृष्टि आया है ॥

सर्व वृत्ति हीन विदेही जीवन मुक्त सोई,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णी ही बताया है ॥

॥ त्रिंश कारिका ॥

विदेह–मुक्ति मरने बाद होवै यों भ्रान्त कहैं,
श्रुति से विरोध नहीं मेरे मन भाया है ॥
'ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति' ब्रह्म का मरण कहां,
शरीर की विस्मृति सो विदेह कहाया हैं ॥
'अशरीरं वाव सन्तं' 'अशरीरं शरीरेषु'
'अत्र ब्रह्म समश्नुते' श्रुतियों में पाया है ॥
'तद्यथाऽहि तिर्ल्वयनि वल्मीके मृता प्रत्यय,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ एकत्रिंश कारिका ॥

प्रकृति प्रधान माया प्रारब्ध अज्ञान मोह,
शक्ति के अनेक नाम शास्त्र में पाया हैं ॥
माया से मन के बीच बन्ध मोक्ष भास रहे,
भोक्ता भोग्य प्रेरक सब तुर्य दर्शाया हैं ॥
मुक्त जीवनन्मुक्त विदेहमुक्त का विभाग नहीं,
अज्ञान से हृदय में अनेक भेद पाया है ॥
एक रस अद्वितीय अखण्ड में भेद कहां,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ द्वात्रिंश कारिका ॥

अभय में भम एसा अस्पर्श नाम योग,
दूरदर्शि योगियों को कठिनाई से पाया है ॥
बहिकरण त्याग अन्तःकरण का व्यवहार नहीं,
सदा भासमान अचल निर्भय दर्शाया है ॥
जप तप अध्ययन किंचित् भी कर्म नहीं,
ग्रहण न त्याग नहीं समता में समाया है ॥
अज है निद्रा स्वप्न नहीं नाम रूप नहीं सोई,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ त्रयस्त्रिंश कारिका ॥

तीन देहहीन स्वप्न जाग्रत सुषुप्ति नहीं,
तीन कालहीन कालातीत कहलाया है ॥
तीन गुणहीन माया प्रतिबिम्ब ईश नहीं,
तीन ताप हीन कहो जीव कहां पाया है ॥
एक क अभाव से द्वैत कहना बनें नहीं,
दो के अभाव कहां तृतीय दरशाया है ॥
एक दो तीन हीन तुर्य कहना होवे नहीं,
रामाश्रम तुर्यातीत तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ चतुस्त्रिंश कारिका ॥

चार महावाक्य चारों वेदों में बखान किये,
महावाक्य हीन ब्रह्म वेदों में ही पाया है ॥
'अयमात्मा ब्रह्म' महावाक्य से दूर कहा,
'प्रज्ञान ब्रह्म' से भी हीन दरशाया है ॥
'अहं ब्रह्मास्मि' से लाखों कोस दूर कहा,
'तत्त्वमसि' वाक्य रूप ब्रह्म नहीं पाया है ॥
ॐ कार वाच्य हीन सर्व वाच्य हीन सोई,
रामाश्रम तुर्यातीत तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ पञ्चत्रिंश कारिका ॥

अभ्रधूली धुन्ध सर्व आकाश में छाय करके,
सूर्य चन्द्र तारों को अदृष्ट कराया है ॥
सूर्य चन्द्र तारों को अदृष्ट करके फिर भी,
आकाश से स्पर्श किञ्चित होन नहीं पाया है ॥
ऐसे ही व्याधि रोग पीड़ा सब आन करके,
बुद्धि मन इन्द्रियों को व्याकुल बनाया है ॥
आकाश रूपी आत्मा का किंचितस्पर्श नहीं,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ षट्त्रिंश कारिका ॥

व्याधि में प्रलाप चाहे तत्त्व का चिन्तन करो,
मन का ये स्वभाव चाहे तूष्णीं दृष्टि आया है॥
बुद्धि भी चेष्टित चाहे निश्चय को त्याग देवो,
कौन आया कौन गया भेद नहीं पाया है ॥
पांचों ज्ञानेन्द्रिय अपने विषयों को भूलो चाहे,
चेष्टा में रहो चाहे शून्य पड़ी काया है ॥
निर्विकार एकरस ज्ञानी को दुःख कहाँ,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ सप्तत्रिंश कारिका ॥

जगन्नाथ बद्रीनाथ रामेश्वर द्वारका में,
गंगा प्रयाग बड़ा तीर्थ कहलाया है ॥
नैमिषारण्य कुरुक्षेत्र काशी अयोध्या मथुरा,
तीर्थराज पुष्कर में चाहे अन्तः पाया है ॥
चाण्डाल के गृह में चाहे सड़ीगन्दी नालियों में,
शुभ अशुभ जगह कहीं तजी काया है ॥
उत्क्रान्ति गतिहीन ज्ञानी मोक्ष रूप सदा,
रामाश्रम तुर्यपद तूष्णीं ही बताया है ॥

॥ अष्टात्रिंश कारिका ॥

कुण्डलिनी शक्ति साढ़ेतीन चक्र लगाय के,
सुषुम्ना के द्वार को मुख से दबाया है ॥
सुप्तवंतशक्ति सोई मंद मंद फुंकार करे,
सोहं शब्द सोइ स्वासोच्छास दरशाया है ॥
केवल कुम्भक से सुषुम्ना का मारग खुले,
षट चक्र भेदन से सहस्त्र दल पाया है ॥
कुण्डलिनी जाग्रत शिवशक्ति संयोग वही,
रामाश्रम तुर्यपद तूर्ष्णीं ही बताया है ॥

॥ नवत्रिंश कारिका ॥

वेदों का सार ओंकार निरन्तर ध्यान,
अभ्यास योग युक्त जिसे अन्त तक गाया है ॥
प्राण उर्ध्व गमन से देवयान गति उसे,
अमानव पुरुष को ब्रह्म से मिलाया है ॥
अपर ब्रह्म प्राप्त होवे ध्यानका प्रभाव सुनो,
देह भेदनान्तर सोई तृतीय पद पाया है ॥
अनावृत्ति शब्द से पुनः आवृत्ति नहीं,
रामाश्रम तुर्यपद तूर्ष्णीं ही बताया है ॥

॥ चत्वारिंश कारिका ॥

प्राणान्त बाद शरीर ज्ञानीका जलाओ मत,
यति को दाह करना अनुचित कहाया है ॥
ज्ञानाग्नि से शरीर जिसने पहलेही दग्ध किया,
दग्ध को दग्ध करना कहीं नहीं पाया है ॥
दिशाओं में बलि देओ चाहे खनन क्रिया करो,
गंगा यमुनादि शुभ नदी में बहाया है ॥
तिलोदक पिंड क्रिया पार्वणादि कर्म नहीं,
रामाश्रम तुरीय पद तूष्णीं ही बताया है ॥
सप्ताभ्र शून्यद्वि शुभे सुवत्सरे भौम तिथौ लक्ष्मण राम जन्मनि,
क्षेत्रे कुशे रामह्रदे सुतीर्थे मौनामृतम लेखियत मयेदम् ॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवा वशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ सच्चिदानन्द परब्रह्म पूर्ण है और यह आत्मा भी पूर्ण है और उस पूर्ण की पूर्णता से ही यह पूर्ण प्रकाशित है। इस पर्ण की पर्णता को लेकर भी वह पूँर्ण ही अवशेष रहता है। त्रिविध ताप की शान्ति हो।